



PROF. PRAKASH CHANDRA SOOD

Prof. Prakash Chandra Sood is an eminent nuclear researcher and scientist. Another area of his activity is institute building not only for academic, but for the wider field of national development.

2. Born on 1st October, 1928, Prof. Sood got his early education in DAV institutions in Jalandhar (Punjab) followed by M.Sc. (Hons) degree of Punjab University in 1952. After three years of teaching in Punjab Government colleges, he proceeded to USA where he completed his Ph.D from Florida State University in January 1958 in a record time of just two years and three months. After a brief stint in BARC (1968-69) he moved to Banaras Hindu University for the next 29 years as a distinguished teacher, academic administrator and developer of new facilities. Post retirement he has been serving as honorary professor at the SSSIHL, Puttaparthi.

3. As a Nuclear Researcher, Prof. Sood has reported his findings in 320 publications in prestigious national and international journals and conferences. As a research propagator, he has been personally connected with 67 Universities and Research labs in India and 62 Institutions in 12 nations abroad.

4. As an Institute builder, Prof. Sood was very closely associated with two research centres of national importance, namely DAE Cyclotron Centre, (VECC) in Calcutta and the first ever UGC sponsored Inter-University Nuclear Science Centre (NSC, later renamed as IUAC), in New Delhi, from planning to commissioning stage. In the early seventies, at BHU, he set up the first van de Graff accelerator based Nuclear Research Lab. In the mid seventies, he took up the challenge of building and setting up the first ever computer center in BHU, wherein he served as founder director (1978-83). He also served as Dean, Faculty of Sciences and Head of department of Computer Science during 1985-87. He also introduced Computer Science as a regular curriculum course in Banaras Hindu University. He was hosted by the Royal Society, UK and Japan society for Promotion of Science (JSPS) for lecture tours. He was also invited to various academic programmes in several countries including USA, Canada, Russia, France, Germany, Italy, Belgium and Nepal.

5. Prof. Sood is the recipient of numerous awards and honours. He is a Fellow of the National Academy of Sciences (FNASc) since 1978, UGC National Fellow (1983-85), UGC Emeritus Fellow (1989- 1992), Vice President, Indian Physical Society (1985-87), Vice President, Indian Physics Association (1979-81). At the International level, UNESCO-IAEA sponsored International Center for Theoretical Physics (ICTP) selected him as a Senior Associate for a 6-year term. He received the National Science Foundation (NSF-USA), International Travel awards for collaborative research (1975-84).



प्रो. प्रकाश चन्द्र सूद

प्रो. प्रकाश चन्द्र सूद एक प्रसिद्ध परमाणु शोधकर्ता और वैज्ञानिक हैं। उनकी गतिविधि का एक अन्य क्षेत्र न सिर्फ अकादमिक, बल्कि राष्ट्रीय विकास के व्यापक उद्देश्य हेतु संस्थान निर्माण है।

2. 1 अक्टूबर, 1928 को जन्मे, प्रो. सूद ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा जालंधर (पंजाब) के डीएवी संस्थान से पाई और उसके बाद 1952 में पंजाब विश्वविद्यालय से एम.एससी. (ऑनर्स) की डिग्री हासिल की। पंजाब सरकार के कॉलेजों में तीन साल तक अध्यापन के बाद, वह अमेरिका चले गए जहां उन्होंने जनवरी 1958 में फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी से महज दो साल और तीन महीने के रिकॉर्ड समय में अपनी पीएचडी पूरी की। बार्क में एक संक्षिप्त कार्यकाल (1968-69) के बाद वे अगले 29 साल तक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में एक प्रतिष्ठित शिक्षक, अकादमिक प्रशासक और नई सुविधाओं के विकासकर्ता के रूप में रहे। सेवानिवृत्ति के बाद वे SSSIHL, पुष्टपथी में मानद प्रोफेसर के रूप में काम कर रहे हैं।

3. एक परमाणु शोधकर्ता के रूप में, प्रो. सूद ने अपनी खोजों की जानकारी प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में 320 प्रकाशनों और सम्मेलनों में दी है। एक शोध प्रचारक के रूप में, वह भारत में 67 विश्वविद्यालयों और शोध प्रयोगशालाओं तथा अन्य 12 देशों के 62 संस्थानों से निजी तौर पर जुड़े हुए हैं।

4. एक संस्थान निर्माता के रूप में, वह राष्ट्रीय महत्व के दो अनुसंधान केंद्रों, कलकत्ता में डीआई साइक्लोट्रॉन सेंटर (VECC) और नई दिल्ली में यूजीसी द्वारा सर्वप्रथम प्रायोजित इंटर-यूनिवर्सिटी न्यूक्लियर साइंस सेंटर (एनएससी, जिसका नाम बदलकर बाद में आईयूएसी कर दिया गया) के साथ योजना बनाने से लेकर चालू होने के चरण तक बहुत करीब से जुड़े थे। सत्तर के दशक की शुरुआत में, प्रो. सूद ने बीएचयू में पहली वैन डी ग्रैफ़ एक्सिलीरेटर आधारित परमाणु अनुसंधान प्रयोगशाला स्थापित की। सत्तर के दशक के मध्य में, उन्होंने बीएचयू में पहली बार कंप्यूटर केंद्र बनाने और स्थापित करने की चुनौती ली, जिसमें उन्होंने संस्थापक निदेशक (1978-83) के रूप में कार्य किया। 1985-87 के दौरान उन्होंने विज्ञान संकाय के डीन और कंप्यूटर विज्ञान विभाग के प्रमुख के रूप में भी काम किया। वह बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में कंप्यूटर विज्ञान को एक नियमित पाठ्यक्रम के रूप में लेकर आए। रॉयल सोसाइटी, यूके और जापान सोसाइटी फॉर प्रमोशन ऑफ साइंस (JSPS) ने व्याख्यान दौरों के लिए उनकी मेजबानी की। उन्हें अमेरिका, कनाडा, रूस, फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेल्जियम और नेपाल सहित कई देशों में विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों में भी आमंत्रित किया गया।

5. प्रो. सूद को अनगिनत पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। वह 1978 से नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज (FNASc) के फेलो; यूजीसी नेशनल फेलो (1983-85); यूजीसी एमेरिटस फेलो (1989-1992), इंडियन फिजिकल सोसाइटी के वाइस प्रेसिडेंट (1985-87); इंडियन फिजिक्स एसोसिएशन के वाइस प्रेसिडेंट (1979-81) रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, यूनेस्को-आईईए प्रायोजित इंटरनेशनल सेंटर फॉर थ्योरेटिकल फिजिक्स (आईसीटीपी) ने उन्हें 6 साल के लिए वरिष्ठ सहयोगी के रूप में चुना। उन्हें कोलेबोरेटिव रिसर्च के लिए नेशनल साइंस फाउंडेशन (NSF-USA) का इंटरनेशनल ट्रैवल पुरस्कार (1975-84) प्राप्त हुआ।